www.pediatric-rheumathology.printo.it

लाइम (LYME) गठिया

यह क्या है?

लाइम गठिया एक ऐसी बीमारी है जो बोरेलिया बर्गडोरफेरी कीटाणु की वजह से होती है। यह कीटाणु इकसोडोक्स रायसीनियस भंगुओं के काटने से शरीर में प्रवेश करता है।

बोरेलिया बर्गडोरफेरी के संक्रमण का प्रभाव खाल, केन्द्रीय मस्तिष्क प्रणाली, हृदय, आंख तथा अन्य अंगों पर पडता है। लाइम गठिया के अधिकतर लोगों में जोडों पर मुख्यतया असर होता है। इन मरीजों में कुछ समय पहले चमडी पर लाल चकत्ते {ऐरीथीमा माइग्रेन्स} जहाँ भंगुओं ने काटा हो, हो सकते हैं। कभी कभार लाइम गठिया का इलाज न कराने से मानव की केन्द्रीय मस्तिष्क प्रणाली भी प्रभावित हो सकती है।

यह बीमारी कितनी आम है?

कुछ ही गठिया से पीडित बच्चों को यह बीमारी होती है लेकिन यूरोपीय देशों में जीवाणु के संक्रमण के बाद बच्चों और युवाओं में लाइम गठिया के मामले बहुत अधिक देखे गये हैं। चार वर्ष की आयु से पहले यह बीमारी शायद ही होती हो अतःयह स्कूल जाने वाले बच्चों की ही बीमारी है।

यह यूरोप के सभी इलाकों में होती है। मध्य यूरोप तथा बाल्टिक समुद्र के आस पास के दक्षिणी स्कैन्डीनेवीयन क्षेत्रों में इसका अधिक प्रभाव देखा गया है। यद्यपि कीडों के काटने से फैलने वाली इस बीमारी का प्रभाव मौसम में तब्दीली, तापमान और आर्द्रता के कारण अप्रैल से अक्टूबर तक निर्भर है लेकिन कीडे के काटने और जोडों में सूजन शुरू होने की अवधि या अन्तराल में भिन्नता की वजह से यह बीमारी साल में कभी भी हो सकती है।

बीमारी के क्या-क्या कारण हैं?

बीमारी का मुख्य कारण एक तरह का कीटाणु है जो कीडे के काटने से मानव शरीर में पहुंचता है लेकिन बहुत से कीडों के काटने से कोई छूत नहीं लगती और यदि कुछ मामलों में खाल पर लाल चकत्ते दिखाई भी दें तो जरूरी नहीं कि यह आगे चलकर इस बीमारी का ही लक्षण हो। इसमें लाइम गठिया भी शामिल है।

यह विशेषकर तब होता है जब चकत्तों के दिखाई देने पर शुरू ही में एन्टीबायोटिक दवाओं से इलाज किया गया हो। एक वर्ष में एक हजार बच्चों मे से किसी एक को लाइम बोरेलियासिस हो सकती है लेकिन बीमारी बढ जाने पर, इलाज न किये जाने की दशा में भी लाइम गठिया कभी कभार हो सकती है।

क्या यह बीमारी माता पिता से मिलती है?

यह छूत की बीमारी है, पर माता पिता से नहीं मिलती है। इस के अलावा भयंकर लाइम गठिया कुछ आनुवंशिक लक्षणों से जुडी होती है लेकिन इसके सूक्ष्म अथवा ठीक-ठीक कारणों का अभी पता नहीं है।

मेरे ही बच्चे को यह बीमारी क्यों हुई? क्या इलाज संभव है?
यूरोपीय इलाकों में, जहां पशुओं की लीखें आम तौर पर होती है, बच्चों को इन से बचाना बहुत मुश्किल है। अधिकतर मामलों में यह होता है कि कीडे या भृंगे {लीख} के काटने के तुरन्त बाद ही शरीर में प्रवेश नहीं करता बल्कि कई घन्टों से लेकर डेढ दिन बाद ही जब बैक्टीरियाई पदार्थ कीडे के राल {थूक} बनाने वाली गांठों तक पहुंचता है और वह मानव शरीर में उसको राल सहित छोड देता है।

लीखें मानव शरीर का खून पीकर तीन चार दिन तक जीवित रहती हैं। यदि गर्मियों में बच्चों की रोज शाम को जांच की जाये तो लीखों को नोचकर तुरन्त अलग कर दिया जाये तो बी0बी0 के संक्रमण की संभावना नहीं रहती।

लेकिन जैसे ही खाल पर जगह-जगह सूजन दिखाई देने लगे तो इसका इलाज एन्टीबायोटिक्स से करना चाहिये। इस तरह बैक्टीरियाई पदार्थ को आगे बढने और फैलने से रोका जा सकेगा तथा लाइम गठिया से बचा जा सकेगा। अमरीका में बी0बी0 की एक किस्म का अवरोधक टीका विकसित किया जा चुका है लेकिन आर्थिक कारणों से इसे बाजार से वापस ले लिया गया। बी0बी0 की किस्मों में भिन्नता होने के कारण यह टीका यूरोप में उपयोगी नहीं है।

क्या यह छूत की बीमारी है?
यद्यपि यह संक्रमण से होती है लेकिन छूत की बीमारी नहीं है अर्थात एक व्यक्ति से दूसरे को नहीं होती क्योंकि विषैले पदार्थ को कीडे द्वारा काटने से ही शरीर में पहुंचाया जा सकता है।

मुख्य लक्षण क्या है?
लाइम गठिया में जोडों में सूजन आ जाती है और उन्हें हिलाने डुलाने में भी कष्ट होता है अतः रोगी का चलना फिरना बहुत कम हो जाता है। कभी कभार बहुत ज्यादा सूजन होने पर भी दर्द नहीं होता या मामूली तौर पर होता है। घुटनों के जोड सबसे अधिक प्रभावित होते हैं लेकिन शरीर के छोटे तथा अन्य जोड भी प्रभावित हो सकते है। ऐसा बहुत कम होता है कि घुटने प्रभावित न हो। दो तिहाई मामलों में एक ही घुटने में गठिया होती है। 95 प्रतिशत से अधिक मामलों में चार या उससे कम जोडों में गठिया की शिकायत होती है लेकिन कुछ समय बाद केवल घुटने के जोड पर ही सूजन दिखाई देती है। लाइम गठिया के दो तिहाई मामले ऐसे होते हैं जो कुछ दिन या कुछ हफ्तों में ठीक हो जाते है। और कुछ समय के बाद फिर उन्ही जोडों में बीमारी शुरू हो जाती है।

जोडों की सूजन की अवधि और बार-बार होने की क्षमता समय के साथ कम होती जाती है लेकिन कुछ मामलों में यह अन्ततः भीषण या भयंकर रूप ले लेती है। कभी कभार ऐसे मामले भी होते हैं जब बीमारी शुरू ही से भयंकर होती है {गठिया की अवधि तीन या अधिक महीने की हो सकती है}।

क्या हर बच्चे में बीमारी समान होती है?
नहीं, यह बीमारी गम्भीर हो सकती है। एक बार ही हो सकती है अथवा बार-बार या भयंकर रूप वाली भी हो सकती है।

क्या बच्चों की बीमारी बडों से अलग होती है?

बच्चों और बडों की बीमारी समान होती है। बच्चों में बडों के मुकाबले अधिक गठिया हो सकती है। इसके विपरीत बच्चा जितना छोटा होगा, यह ज्यादा तेजी से उभरेगी और एन्टीबायोटिक इलाज से ठीक होने की सम्भावना भी अधिक होगी।

इसका पता कैसे लगाते हैं?

जब किसी ज्ञात कारण के बिना ही बीमारी शुरू होती है तो लाइम गठिया का फर्क मालूम करना सम्भव है। सन्देह होने पर खून की जांच और जोडों से रिसने वाले पदार्थ के परीक्षण से इसका पता लगाया जा सकता हैं। रक्त में बी0बी0 रोधक एंटीबाडीज की मौजूदगी की जांच एलाईजा परीक्षण से की जाती है। यदि इस परीक्षण से एंटीबाडी का होना मालूम हो जाये तो एक और परीक्षण इम्यूनो ब्लाट या वेस्टर्न ब्लाट से इसकी मौजूदगी निश्चित की जाती है। यदि गठिया के कारण का पता न हो तो उपर बताये गये परीक्षण से मौजूदगी स्पष्ट हो जाये तो यह लाइम गठिया हो सकता है। जोडों से रिसने वाले तरल पदार्थ की समीक्षा से बी0बी0 के जीवांशु का एक अन्य तरीके पालीमिरेज चेन रिएक्शन द्वारा पता लगाया जा सकता है। इसका प्रयोगशाला टेस्ट आसान नहीं होता और बहुत कम प्रयोगशालाओं ही में ठीक-ठीक नतीजा मालूम हो पाता है। लाइम गठिया की जांच किसी जोड रोग विशेषज्ञ अथवा हड्डी रोग चिकित्सालय में ही करानी चाहिये। इलाज से फायदा न होने की स्थिति में बच्चे के इलाज के लिये किसी संधिवातीय रोग विशेषज्ञ से ही परामर्श लेना चाहिये।

जॉच-परीक्षण का महत्व क्या है?

संक्रमण की जॉच के अलावा खून में प्रदहन के लक्षण व अन्य जांचे की जाती है। इसके अलावा गठिया के अन्य कारणों का पता भी लगाना चाहिये और इस के लिये प्रयोगशाला में उचित परीक्षण किये जाने चाहिये। एक बार जब उपर वर्णित परीक्षणों से लाइम गठिया का होना निश्चित हो जाये तो फिर इन परीक्षणों को दोहराने से एंटीबायोटिक इलाज के लाभ का पता नहीं चलता है। इसके विपरीत सफल इलाज के बावजूद वर्षो तक इन परीक्षणों में संक्रमण का प्रभाव दिख सकता है।

क्या इलाज हो सकता है?

चूंकि लाइम गठिया बैक्टीरिया के संक्रमण से फैलने वाली बीमारी है, इस का इलाज एन्टीबायोटिक दवायें ही हैं। अस्सी प्रतिशत मरीजों को एक या दो बार के एन्टीबायोटिक इलाज से फायदा हो जाता है। बाकी के 10-20 प्रतिशत मामलों में एन्टीबायोटिक इलाज करते रहने से आम तौर पर बीमारी ठीक नहीं होती पर जोडों से रिसाव को रोकने के लिये इलाज किया जाना जरूरी है।

फिर इलाज क्या है?

लाइम गठिया के मरीजों को चार हफ्ते तक खाने वाली एन्टीबायोटिक दवायें या दो हफ्ते तक इन्जेक्शन द्वारा ये दवायें देनी चाहियें। चूंकि एमाक्सीसिलिन या डाक्सीसाइक्लिन देना मुश्किल हो सकता है तो सेफट्रिक्सान या सेफोटैक्सीन का इन्जेक्शन ज्यादा फायदेमन्द हो सकता है।

दवाओं से इलाज के दुष्प्रभाव क्या हैं?

खाने वाली दवाओं से दस्त या एलर्जी प्रतिक्रिया हो सकती है। अधिकतर दुष्प्रभाव कभी कभार या मामूली होते है।

इलाज कितने दिन तक चलता है?

एन्टीबायोटिक दवायें लेने के बाद छः हफ्ते इन्तजार करना चाहिये तब ही यह निश्चित हो पायेगा कि इलाज से गठिया को कोई फायदा नहीं हुआ। यदि ऐसा है तो एन्टीबायोटिक का दूसरा इलाज दिया जा सकता है। फिर छः हफ्ते तक देखने के बाद भी गठिया बाकी रहे तो एन्टी रयूमैटिक दवाइयां दी जानी चाहिये।

गैर परम्परागत या सहायक चिकित्सा के बारे में क्या राय है?
जब एन्टीबायोटिक इलाज नाकाम रहे तो अन्य रयूमैटिक बीमारियों की तरह माता-पिता गैर परम्परागत दवायें इस्तेमाल करने की सोंच सकते हैं लेकिन उनके लाभकारी होने का प्रमाण नहीं है।

समय-समय पर किस तरह का परीक्षण कराना चाहिये?
एकमात्र लाभदायक जांच जोडों की हो सकती है। गठिया जितनी अधिक अवधि के बाद गायब होता है उतना ही दोबारा होने की संभावना कम होती है।

यह बीमारी कितने दिन तक रहती है?
80 प्रतिशत से अधिक मामलों में एन्टीबायोटिक के एक दो इलाज के बाद बीमारी समाप्त हो जाती है। बाकी मामलों में कई महीनों से कई वर्षो तक गठिया बीमारी पूरी तरह ठीक हो जाती है।

कितने अधिक समय तक गठिया रहेगा?
एन्टीबायोटिक इलाज के बाद, अधिकतर मामलों में बीमारी कोई निशान या नतीजा छोडे बिना खत्म हो जाती है। ऐसे कुछ मामले हैं जिनमें जोडों को स्पष्ट क्षति पहुंचती है जिसकी वजह से चलने फिरने में कठिनाई होती है तथा समय से पहले ही उम्र का गठिया हो जाती है।

क्या पूरी तरह ठीक होना सम्भव है?
हां, 95 प्रतिशत से अधिक बच्चों में पूरी तरह स्वस्थ होना सम्भव है।

इस बीमारी से बच्चे और परिवार का दैनिक जीवन कितना प्रभावित होता है?
दर्द होने और चलने फिरने में दिक्कत की वजह से बच्चा खेल-कूद में भाग नहीं ले सकता, मिसाल के तौर पर वह पहले की तरह तेज नहीं दौड सकता। ज्यादातर मरीजों में बीमारी मामूली होती है और अधिकतर समस्यायें छोटी तथा जल्द ही समाप्त हो जाती हैं।

स्कूल जाने के बारे में क्या कहते हैं?
कुछ समय के लिये बच्चा स्कूल में खेल कूद में हिस्सा नहीं ले सकता, उसके बाद उसे स्वयं तय करना होगा कि कौन सी गतिविधियों में भाग लेना चाहिये और किन में नहीं।

खेलों के बारे में भी बताइये?
बच्चे को खेल के बारे में खुद तय करना चाहिये। यदि वह किसी स्पोर्ट क्लब के निश्चित और नियमित कार्यक्रम में शामिल होना चाहता है तो उस कार्यक्रम के लिये जरूरतों को अपने हिसाब से कम करना ही उचित होगा।

खानपान के बारे में क्या करें?

भोजन संतुलित लेना चाहिये जिसमें प्रोटीन, कैल्शियम और विटामिन की प्रचुर मात्रा हो। खान-पान में बदलाव से बीमारी पर कोई असर नहीं पडता।

क्या मौसम का बीमारी पर कोई प्रभाव पडता है?
यद्यपि भुंगों को गर्म तथा आर्द्र वातावरण चाहिये। पर एक बार कीटाणु जोड में पहुँच जाये उसके बाद बीमारी पर मौसम बदलने का असर नहीं होता।

क्या बच्चे को टीके लगाये जा सकते हैं?
टीके लगवाने पर कोई रोक नहीं है। टीकों की उपयोगिता पर बीमारी या उसके इलाज से कोई असर नहीं पडता, न ही कोई दुष्प्रभाव होता है। वर्तमान में लाइम बोरेलियोसिस को कोई टीका उपलब्ध नहीं है।